



JINENDER SONI  
Founder, MISSION GYAN

## अध्याय-13 | जैव-विविधता एवं संरक्षण

### बहुविकल्पी प्रश्न

- भारत का प्रथम राष्ट्रीय उद्यान है—  
 (अ) कान्हा राष्ट्रीय उद्यान (ब) काजीरंगा राष्ट्रीय उद्यान  
 (स) दुधवा राष्ट्रीय उद्यान (द) कॉर्बेट राष्ट्रीय उद्यान
- निम्नलिखित में से कौन भारतीय जैव-विविधता तप्त स्थल नहीं है?  
 (अ) पश्चिमी घाट (ब) मेडागास्कर एवं हिन्द महासागर  
 (स) इण्डो-बर्मा (द) पूर्वी हिमालय
- नीचे दिए गए पारिस्थितिक तंत्र में, अधिकतम जैवविविधता कहाँ मिल सकती है?  
 (अ) अल्पाइन शाद्वल (ब) कोरल रीफ  
 (स) मरूस्थल (द) मैंग्रोव वनस्पति
- निम्न में से किस देश में जैव-विविधता सबसे अधिक है?  
 (अ) रूस (ब) ब्राजील  
 (स) दक्षिण अफ्रीका (द) भारत
- जीवों के अस्तित्व को सबसे बड़े खतरे का कारण है—  
 (अ) वनों का कटाव (ब) मरूस्थलीकरण  
 (स) विकिरण (द) इनमें से कोई नहीं
- प्राकृतिक वासस्थान में जीवों का संरक्षण कहलाता है—  
 (अ) उत्स्थाने संरक्षण व स्वस्थाने संरक्षण दोनों (ब) स्वस्थाने संरक्षण  
 (स) उत्स्थाने संरक्षण (द) इनमें से कोई नहीं
- दुर्लभ तथा संकटग्रस्त पौधों के जर्मप्लाज्म को संरक्षित रखने की सबसे उपयुक्त प्रक्रिया है—  
 (अ) जीन बैंक (ब) ब्राह्मस्थाने पादप संरक्षण  
 (स) क्रायोप्रिजर्वेशन (द) ऊतक संवर्धन
- पौधों के निम्नलिखित समूह में से कौन अधिक प्रजाति विविधता प्रदर्शित करता है?  
 (अ) ब्रायोफाइट्स (ब) कवक  
 (स) शैवाल (द) एंजियोस्पर्म
- निम्न में से कहाँ आपको पिचर प्लांट मिल सकता है—  
 (अ) सुंदर वन (ब) पूर्वोत्तर भारत के वर्षा वन  
 (स) पश्चिमी घाट (द) थार मरूस्थल

10. भारतीय संदर्भ में निम्नलिखित में से कौन एक आक्रामक विदेशी प्रजाति नहीं है?

- (अ) पार्थेनियम  
(स) साइनोडॉज

- (ब) लैटाना  
(द) आइकोर्निया

### रिक्त स्थान :

11. अमेजन वन पृथ्वी के वायुमण्डल को लगभग 20 प्रतिशत ऑक्सीजन \_\_\_\_\_ द्वारा प्रदान करती है।

12. घास (पार्थेनियम), \_\_\_\_\_ एवं \_\_\_\_\_ जैसी आक्रामक खरपतवार जातियों से पर्यावरण को क्षति पहुंचती है।

### सत्य / असत्य

13. जैव विविधता, जैवीय संगठन के सभी स्तरों में उपस्थित कुल विविधता को दर्शाती है।

14. स्वस्थाने संरक्षण में संकटापन्न जातियों को इनके प्राकृतिक आवास में सुरक्षित रखा जाता है।

### अति लघूत्तरात्मक प्रश्न

15. रेड डाटा बुक क्या है?

16. कौन-सी विशेषताएँ किसी समुदाय को स्थिर बनाती है?

### लघूत्तरात्मक प्रश्न

17. प्रजातियों की विविधता पारिस्थितिक विविधता से कैसे भिन्न होती है?

18. एक लुप्तप्राय प्रजाति क्या है? एक लुप्तप्राय पौधे और पशु प्रजातियों का उदाहरण दें?

### निबंधात्मक प्रश्न

19. जीवमण्डल आरक्षितियों एवं राष्ट्रीय उद्यान का एक विवरण दीजिए।

20. वन्य जीव संरक्षण क्यों आवश्यक है? इस विषय में सरकार क्या कदम उठा रही है?

### HOTS

21. कथन (A) – हॉटस्पॉट जैव विविधता के संरक्षण के लिए महत्वपूर्ण क्षेत्र है।

कारण (R) – हॉट स्पॉट में पौधों और जानवरों की उच्च संख्या में स्थानिक प्रजातियाँ पाई जाती हैं।

(अ) दोनों कथन (A) और कारण (R) सही है, कारण (A), कथन (R) की सही व्याख्या करता है।

(ब) दोनों कथन (A) और कारण (R) सही है, लेकिन कारण (R), कथन (A) की सही व्याख्या नहीं करता है।

(स) कथन (A) सही है, लेकिन कारण (R) गलत है।

(द) कथन (A) गलत है, लेकिन कारण (R) सही है।

JINENDER SONI  
Founder, MISSION GYAN

## अध्याय-13 | जैव-विविधता एवं संरक्षण

1. (द) कॉर्बेट राष्ट्रीय उद्यान
2. (ब) मेडागास्कर एवं हिन्द महासागर
3. (स)  
कोरल रीफ सबसे अधिक उत्पादक पारिस्थितिकी तंत्र (2,000-6,000 किलो-कैलोरी) है और तटीय क्षेत्र के सबसे विविधत भाग का निर्माण करते हैं। यह मछली, मोलस्क, क्रस्टेशियन स्पंज, निडेरियन, आदि को एक घर प्रदान करता है। मैंग्रोव, तटीय क्षेत्रों में पाए जाते हैं, आमतौर पर दलदली और खारे पानी में उगने वाले पौधे होते हैं, रेगिस्तानों में ज्यादातर जीरोफाइटिक प्रजातियां हैं और अल्पाइन घास के मैदान उच्च तुंगता से संबंधित है और पेड़ की अधिक वृद्धि नहीं दिखाते हैं।
4. (ब)  
ब्राजील, ग्रह पर वनस्पतियों और जीवों की सबसे बड़ी जैव-विविधता वाला देश है। यहाँ ज्ञात स्तनधारियों और ताजे पानी की मछलियों की प्रजातियों और पेड़ों और झाड़ियों की 50,000 से अधिक प्रजातियां हैं। यह पौधे की विविधता में पहले स्थान पर है। ब्राजील की जलवायु अपेक्षाकृत अविभाज्य बनी हुई है, विविधीकरण के लिए निरंतर और पूर्वानुमेयता दे रही है, जो समृद्ध जैव-विविधता का पक्षधर है।
5. (अ) वनों का कटाव
6. (ब) स्वस्थाने संरक्षण
7. (स) क्रायोप्रिजर्वेशन
8. (ब)  
कवक अधिक प्रजाति विविधता प्रदर्शित करता है। वे विभिन्न रूपों, आकार, शरीर विज्ञान (फिजियोलॉजी) और प्रजनन की विधि के साथ यूकैरियोटिक हेटेरोमॉर्फिक जीवों का एक समूह है।
9. (ब) पूर्वोत्तर भारत के वर्षा वन
10. (स)  
विदेशी प्रजातियों की बदली हुई जैविक अंतःक्रिया के माध्यम से मूल प्रजातियों के गायब होने का कारण बन सकती हैं। साइनोडॉन (दूब घास) एक आक्रामक विदेशी प्रजाति नहीं है। यह एक प्रमुख उष्णकटिबंधीय घास है जो सभी उष्णकटिबंधीय और उपोष्णकटिबंधीय क्षेत्रों में पाई जाती है। यह सूखे और भारी चराई के लिए अत्यधिक सहिष्णु है, और इसलिए, चराई के लिए बेहद मूल्यवान है। अन्य तीन पार्थेनियम (कांग्रेस या गाजर घास), आइकोर्निया जल जलकुम्भी और लैंटाना विदेशी प्रजातियां है जो देशी प्रजातियों के लिए खतरा पैदा करती है।
11. रिक्त स्थान : प्रकाश संश्लेषण
12. रिक्त स्थान : लैंटाना हायसिंथ
13. सत्य / असत्य : सत्य
14. सत्य / असत्य : सत्य
15. इण्टरनेशनल यूनियन फॉर कन्जर्वेशन ऑफ नेचर एण्ड नेचुरल रिसोर्सज (IUCN) द्वारा प्रकाशित पुस्तक जिसमें विश्व की संकटापन्न प्रजातियों का विवरण होता है, रेड डाटा बुक कहलाती है। इसमें संकटापन्न जातियों को अनेक श्रेणियों ने वर्गीकृत किया गया है, जैसे- प्राकृतिक आवासों में विलुप्त, क्रांतिक संकटापन्न, संकटापन्न, सुभेद्ध संकटाग्रस्त, दुर्लभ आदि।
16. I. सामुदायिक स्थिरता परिवर्तन से प्रतिरोध या पलटाव करने के लिए एक समुदाय की क्षमता के रूप में परिभाषित किया गया है।  
II. वे विशेषताएँ, जो किसी समुदाय को स्थिर बनाती हैं, हैं-  
i. वर्ष-दर-वर्ष उत्पादकता में कम भिन्नता।  
ii. सामयिक बाधाओं प्राकृतिक या मानव निर्मित के लिए प्रतिरोध या लचीलापन।  
iii. उन्हें विदेशी प्रजातियों द्वारा आक्रमणों को रोकने में सक्षम होना चाहिए।

## 17. I. प्रजाति विविधता -

- यह प्रजाति समृद्धि का एक माप है जो समतुल्यता के साथ संयुक्त है।
- किसी क्षेत्र में मौजूद पौधों और जानवरों की प्रजातियों की संख्या इसकी प्रजातियों की विविधता का गठन करती है। इस विविधता को प्राकृतिक पारिस्थितिकी तंत्र और कृषि पारिस्थितिकी तंत्र दोनों में देखा जाता है।
- उदाहरण के लिए बंदर, ड्रैगनफ्लाई और शादल आदि सभी अलग-अलग प्रजातियां हैं।

## II. पारिस्थितिक विविधता -

- यह किसी क्षेत्र या आवास के भीतर पारिस्थितिक तंत्र में भिन्नता है। बढ़ी हुई पारिस्थितिक विविधता के साथ जैव विविधता की अधिक संभावना है, लेकिन इसके विपरीत नहीं।
- यह प्रजातियों का एक विशिष्ट संयोजन है जो एक ही क्षेत्र में एक साथ रहते हैं और अपने भौतिक वातावरण के साथ अनूठे तरीके से परस्पर क्रिया करते हैं। इसमें स्थलीय और जलीय दोनों पारिस्थितिकी तंत्र में भिन्नता शामिल है।
- उदाहरण के लिए, रेगिस्तान, आर्द्रभूमि, जंगल, घास के मैदान, महासागर, आदि।

18. I. एक लुप्त प्रजाति जीवों की आबादी है जो अपने वातावरण में प्राकृतिक या मानव-निर्मित परिवर्तनों में विलुप्त होने का खतरा है।

II. वे विलुप्त होने के उच्च जोखिम का सामना करते हैं क्योंकि -

- इसकी संख्या बहुत कम है।
- पर्यावरण के बदलने से यह संकट है।

iii. यह परभक्षी खतरे का सामना कर रहा है।

III. लुप्तप्राय पौधों और जानवरों के उदाहरण क्रमशः वीनस-फ्लाई ट्रेप और साइबेरियन बाघ हैं।

## 19. बायोस्फीयर आरक्षित या अभयारण्य -

बायोस्फीयर रिजर्व का विचार यूनेस्को (UNESCO) के मैन एण्ड बायोस्फीयर (MAB) कार्यक्रम के अधीन 1973-74 में प्रकाश में आया। भारत में यह सन् 1986 से प्रारम्भ हुआ। बायोस्फीयर रिजर्व एक विशिष्टीकृत व सूचीबद्ध संरक्षण क्षेत्र है जिसके क्षेत्र को कुछ भागों में बाँटकर विशिष्ट दिशा-निर्देशों के अनुसार संरक्षण किया जाता है। ऐसे बहुउद्देशीय आरक्षित क्षेत्र जिनके द्वारा किसी भी पारितंत्र में विविधता बनाए रखी जाती है, जैवमण्डल आरक्षित क्षेत्र कहलाते हैं। इन क्षेत्रों में वन्य जन्तुओं तथा पादपों की जातियों को संरक्षण प्रदान किया जाता है। यहाँ प्राकृतिक रूप से मिलने वाले पादपों और जन्तु समुदायों को बिना किसी बाहरी हस्तक्षेप के फलने फूलने दिया जाता है। इसी कारण पारिस्थितिकी एवं पर्यावरण के क्षेत्र में अनुसंधान एवं शिक्षा के लिए जीवमण्डल आरक्षित क्षेत्र का विशेष महत्व होता है। भारत सरकार ने वर्तमान में 19 जैवमण्डल आरक्षित क्षेत्रों को संरक्षण प्रदान किया है जिनमें से 8 भारतीय जैवमण्डल आरक्षित क्षेत्र यूनेस्को (UNESCO) द्वारा सन् 1971 में मैन एवं बायोस्फीयर प्रोग्राम (Man and Biosphere Programme) के अन्तर्गत बनी सूची में शामिल है।

जैवमण्डल आरक्षित क्षेत्र को निम्नलिखित भागों में बाँटा जाता है-

I. **कोर अनुक्षेत्र** - यह जीवमण्डल आरक्षित क्षेत्र का केन्द्रीय भाग होता है। इसमें किसी भी प्रकार की मानव क्रियाओं की अनुमति नहीं होती है।

II. **बफर अनुक्षेत्र** - यह कोर अनुक्षेत्र के ठीक बाहर होता है। इसमें मानव को सीमित क्रियाकलापों की अनुमति होती है। इस क्षेत्र में शैक्षिक एवं अनुसन्धान कार्य किए जा सकते हैं।

III. **कुशल योजना अनुक्षेत्र** - इसे ट्रांजिशन जोन भी कहा जाता है। इसमें पारितंत्र के लिए उपयोगी मानव क्रियाओं की अनुमति दी जाती है, जैसे - पर्यटन, शिक्षा, ट्रेनिंग आदि।

इसे दो क्षेत्रों में बाँट सकते हैं-

**i. कृषि क्षेत्र (Agriculture Zone)-** इस क्षेत्र में वन्य आबादी और आदिवासी साथ-साथ रहते हैं। आदिवासी कृषि करते हैं।

**ii. पुनःस्थापन क्षेत्र (Restoration Zone)-** इस क्षेत्र में प्राकृतिक दशाओं को पुनःस्थापित किया जाता है।

जैवमण्डल आरक्षित क्षेत्र का महत्व (Significance of Biosphere Reserve)

a. वन्य प्राणी एवं पादपों का संरक्षण करना।

b. पर्यावरण एवं पारिस्थितिक शोध, शिक्षा एवं प्रशिक्षण के लिए अवसर प्रदान करना।

c. अन्तर्राष्ट्रीय सहयोग को प्रोत्साहित करना।

**राष्ट्रीय उद्यान (National Parks) -** वन्य जीवों को सुरक्षित आवास उपलब्ध कराने हेतु केन्द्र सरकार राष्ट्रीय उद्यानों की स्थापना करती है। इन उद्यानों में किसी भी प्रकार का मानवीय हस्तक्षेप मना होता है। इनमें किसी प्रकार के निजी स्वामित्व के अधिकार नहीं दिए जाते। राष्ट्रीय उद्यान वन्य जीव एवं पारिस्थितिक तन्त्र दोनों के संरक्षण के लिए सुनिश्चित होते हैं। इनमें शिकार करना, पशुओं को चराना आदि पूर्णरूप से वर्जित होता है अर्थात् इन उद्यानों में उपस्थित सम्पदाओं को व्यावसायिक निष्कर्षण के लिए उपयोग नहीं किया जाता। वर्तमान समय में हमारे देश में 105 राष्ट्रीय उद्यान हैं जो भारत के 39,919 वर्ग किमी क्षेत्र में फैले हुए हैं। भारत के प्रथम राष्ट्रीय उद्यान हैली राष्ट्रीय उद्यान की स्थापना सन् 1936 में हुई थी जिसे वर्तमान समय में जिम कार्बेट राष्ट्रीय उद्यान (Jim Corbett National Park) के नाम से जाना जाता है। इनकी स्थापना एवं नियन्त्रण केन्द्र सरकार के अधीन होता है परन्तु इनकी व्यवस्था राज्य सरकार के अधीन होती है। यह IUCN के श्रेणी II के संरक्षित क्षेत्र हैं।

**20. वन्य जीव संरक्षण का महत्त्व या आवश्यकता -** जैव-विविधता संरक्षण के अनेकानेक प्रत्यक्ष व परोक्ष लाभ हैं। सभी लाभों का अपना महत्त्व है। जैव-विविधता से होने वाले लाभों का अध्ययन इन्हें तीन प्रकारों में विभाजित करके किया जा सकता है-संकीर्ण लाभ वाले, व्यापक लाभ वाले व नैतिक।

**I. संकीर्ण लाभ वाले -** इस प्रकार के लाभों में जैव-विविधता से होने वाले प्रत्यक्ष लाभों (direct advantages) को शामिल किया गया है। अनेक जैव प्रजातियाँ मनुष्य के लिए प्रत्यक्ष रूप से लाभप्रद हैं। जैव-विविधता के प्रत्यक्ष लाभों की यह सूची इतनी लम्बी है कि इस पूरी सूची को प्रस्तुत करना किसी भी एक पुस्तक में सम्भव नहीं हो सकता। अतः यहाँ कुछ महत्त्वपूर्ण लाभों का संक्षेप में वर्णन किया जा रहा है-

**i. औषधीय मूल्य (Medicinal Value)-** रोगों के उपचार में दी जाने वाली अधिकांश औषधियाँ मूलरूप से पौधों से प्राप्त की जाती थीं। वैश्विक स्तर पर लगभग 25000 पादप प्रजातियों का उपयोग विभिन्न देशों में विभिन्न परम्परागत चिकित्सा पद्धतियों में किया जाता है। भारत में आयुर्वेद में तो औषधियाँ पादपों से ही प्राप्त की जाती हैं। पूरे विश्व में बाजार में उपलब्ध 25% से भी अधिक औषधियाँ पेड़-पौधों से प्राप्त की जाती हैं। उष्णकटिबन्धीय वर्षावनों में अभी हजारों-लाखों पादप प्रजातियों की पहचान करना बाकी है। इनमें से अनेक महत्त्वपूर्ण औषधियों का स्रोत सिद्ध हो सकती हैं।

**ii. बायोप्रोस्पेक्टिंग (Bioprospecting)-** जीव विज्ञान क्षेत्र में किए जाने वाले वह शोध कार्य हैं जो आर्थिक महत्त्व के जैव उत्पादों की आण्विक (molecular), आनुवंशिक (genetics) व प्रजाति स्तर की विविधता से सम्बन्धित होते हैं।

औद्योगिक महत्त्व - टिम्बर, पेपर, पल्प, टैनिन (tannins), डाई (dye), रेजिन (resins), इत्र व सुगन्ध (perfumes), रबड़ (rubber), लुब्रिकेन्ट (lubricants), बी वेक्स (bee bax), शहद (honey) आदि भी जैव-विविधता का ही अंग हैं।

**iii. कृषि महत्त्व (Agricultural Value)-** जैव-विविधता से प्राप्त खाद्य पदार्थों की सूची भी बहुत लम्बी है। मनुष्य विभिन्न प्रकार के खाद्यान्न (cereals), दलहन (pulses), तेलीय बीज (oil seeds), फल, तरकारियाँ आदि जैवविविधता से ही प्राप्त करता है। वस्त्र निर्माण हेतु रेशे, इमारती व ईंधन हेतु लकड़ी जैव-विविधता से प्राप्त होती हैं। पादप प्रजातियों की विभिन्न किस्मों के रूप में पायी जाने वाली आनुवंशिक विविधता भी अत्यधिक महत्त्व की है। यह पादप प्रजनन या जेनेटिक इंजीनियरिंग हेतु वांछित (मानवोपयोगी) जीन उपलब्ध कराने की क्षमता रखती है।

**II. व्यापक लाभ वाले** - पारितन्त्र सेवाओं का आधार जैव-विविधता ही बनाती है। इन्हें अप्रत्यक्ष (indirect) लाभों की श्रेणी में रखा जाता है क्योंकि यह अत्यधिक व्यापक स्तर पर सम्पन्न होने वाले हैं तथा सतही रूप में दिखाई नहीं देते।-

**i. जैव भू-रासायनिक चक्र (Bio geo-chemical Cycle)-** पारितन्त्र के महत्त्वपूर्ण गुण हैं, ऊर्जा प्रवाह तथा पोषक पदार्थों का चक्रण। अनेकानेक प्रकार के जीवधारी पोषण चक्रण में उल्लेखनीय योगदान करते हैं। वायुमण्डल से श्वसन में छोड़ी गयी कार्बन डाइऑक्साइड को कम करना, वायुमण्डल में ऑक्सीजन मुक्त करना, नाइट्रोजन स्थिरीकरण, जल चक्र में मदद आदि सभी कार्य जैव-विविधता द्वारा सम्पन्न होते हैं।

**ii. अपशिष्ट निस्तारण** - अनेक जीव प्रकृति के अपमार्जक (scavenger) व अपघटक (decomposer) के रूप में कार्य करते हैं।

**iii. स्वच्छ जल की उपलब्धता (Availability of Freshwater)-** प्राकृतिक पारितन्त्रों व वनों का एक महत्त्वपूर्ण गुण स्पंज प्रभाव (sponge effect) दर्शाना है। इसका अर्थ है उनमें जल को सोख लेने की क्षमता होती है तथा साथ ही यह नियमित अन्तराल पर जल को मुक्त भी करते हैं। वन वर्षा लाने में मदद करते हैं, अपनी कैनोपी से वर्षाजल की गतिज ऊर्जा को कम कर, मृदा अपरदन (soil erosion) रोकते हैं, भूमिगत जल को रिचार्ज करते हैं तथा बाढ़ रोकते हैं।

- वन मृदा संरक्षण (soil conservation) हेतु महत्त्वपूर्ण हैं।
- यह जलवायु का नियमन (climate regulation) करते हैं।
- वायुमण्डल से बड़ी मात्रा में कार्बन डाइऑक्साइड का अवशोषण कर यह वैश्विक तापान (global warming) के प्रभाव को कम करते हैं।
- आवृतबीजियों में परागण विभिन्न प्रकार के कीट व अन्य जन्तु सम्पन्न करते हैं।

**III. नैतिक तर्क:** मनुष्य को प्रकृति के तानेबाने में हस्तक्षेप का कोई नैतिक अधिकार नहीं।

वन्य जीव संरक्षण हेतु वैधानिक उपाय

- वन्य प्राणियों की सुरक्षा हेतु संविधान में विशेष व्यवस्था की गई है। वन्य प्राणियों का शिकार करना कानूनन अपराध घोषित किया गया है। इसी हेतु वन्य जीव सुरक्षा अधिनियम 1972 पारित किया गया।
- संकटग्रस्त वन्य जीवों की खाल, सींग, दाँत, अस्थियों से निर्मित वस्तुओं का व्यापार एवं निर्यात गैर-कानूनी है।

- i. वन्य जीवों की सुरक्षा हेतु प्रतिवर्ष 1 अक्टूबर से 8 अक्टूबर तक वन्य जीवन सप्ताह मनाया जाता है।
- ii. संविधान के 42वें संशोधन द्वारा सन् 1976 में वन्य प्राणियों एवं वनों को समवर्ती सूची में शामिल किया गया है। इस प्रावधान के अन्तर्गत केन्द्रीय सरकार राष्ट्रीय महत्त्व के अभयारण्य, का अधिग्रहण कर सकती है। सरकार को राष्ट्रीय पार्क बायोस्फीयर रिजर्व स्थापित करने का अधिकार प्रदान किया गया है।
- iii. केन्द्र सरकार की अनुमति के बिना जंगलों का किसी भी कार्य के लिए विनाश किया जाना वर्जित है।
- iv. पर्यावरण संरक्षण हेतु प्रतिवर्ष 5 जून को विश्व पर्यावरण दिवस मनाया जाता है।

## 21. (अ)

जैव-विविधता हॉटस्पॉट ऐसे क्षेत्र है जो अद्वितीय और स्थानिक प्रजातियों में समृद्ध होते हैं और जो अपने प्राकृतिक आवासों के नुकसान के कारण खतरे में हैं। इन क्षेत्रों में पौधों और जानवरों की कुल संख्या में स्थानिक प्रजातियाँ पाई जाती हैं। जिसका अर्थ है कि ये प्रजातियाँ दुनिया में कहीं और नहीं पाई जाती हैं।

**उदाहरण के लिए :** भारत में चार जैव विविधता हॉटस्पॉट है- हिमालय, पश्चिमी घाट, इंडो-बर्मा क्षेत्र और सुंदरलैण्ड है। इन क्षेत्रों में कई स्थानिक प्रजातियाँ पाई जाती हैं।

पढ़ें: जब चाहें, जहाँ चाहें, जैसे चाहें!

# 100% FREE!

Video COURSES | QUIZ | PDF | TEST SERIES  
Download Mission Gyan App